RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

12th HISTORY

ARJUN BATCH

ईंटें, मनके तथा अस्थियां

हड़प्पा सभ्यता

अध्याय-1 | भाग-3



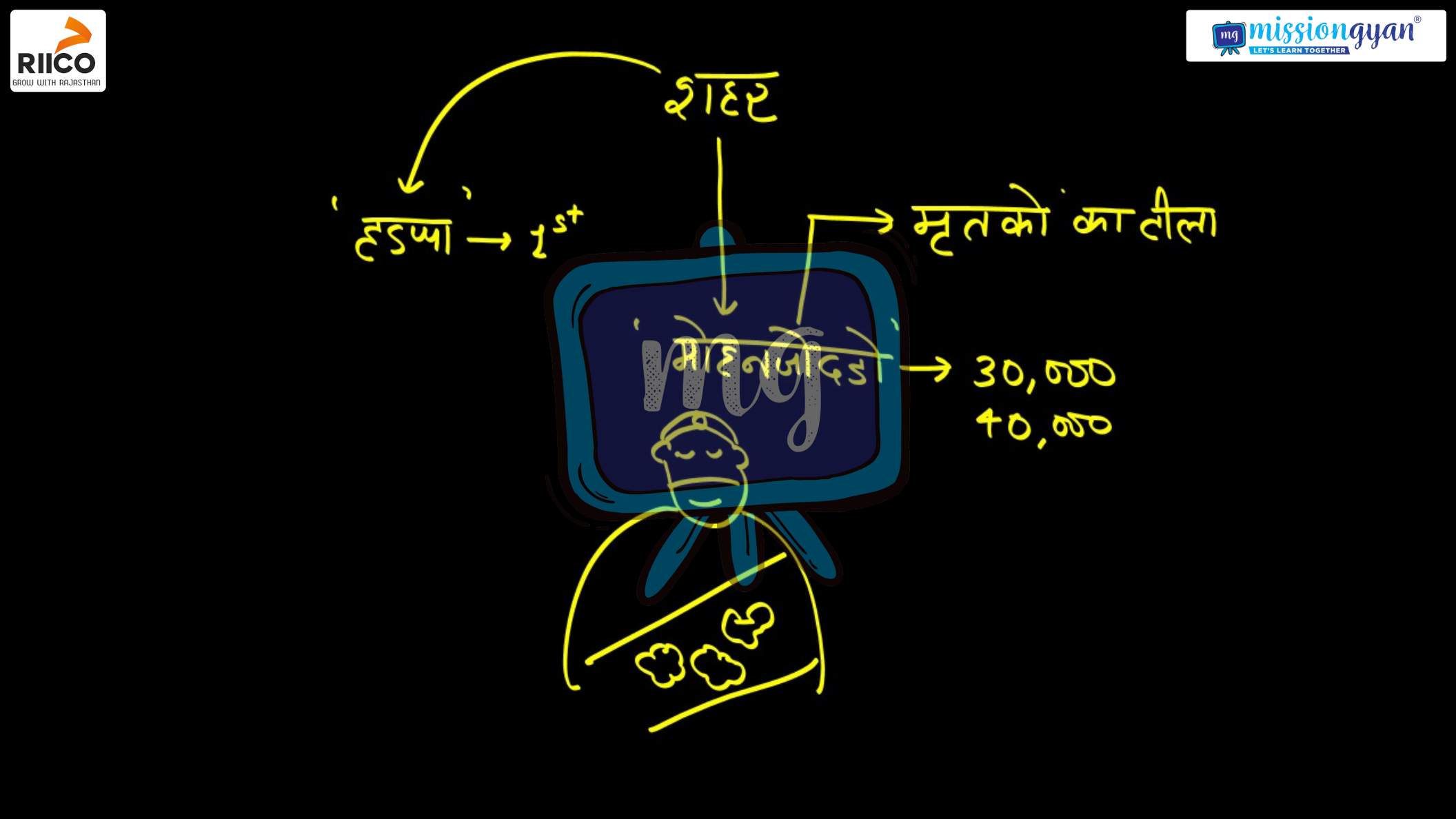
शहर
हड़प्पा → 1st
मृतकों का टीला
मोहनजोदड़ो
30,000
40,000

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

व्हीलर

REM

SV



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2

भिन्नता

मोहनजोदड़ो

(एक नियोजित शहर) बस्ती



छोटा

(ऊँचाई) दुर्ग

बड़ा

(नीचा) निचला

संरचनाऐं कच्ची ईंटों के चबूतरे पर बनी।

निचले शहर से अलग करने के लिए दीवार का घेरा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

40,000 ←

शासन ←



निचला शहर

नालियां
↳ गलियों
सड़कों ←
↳ घर

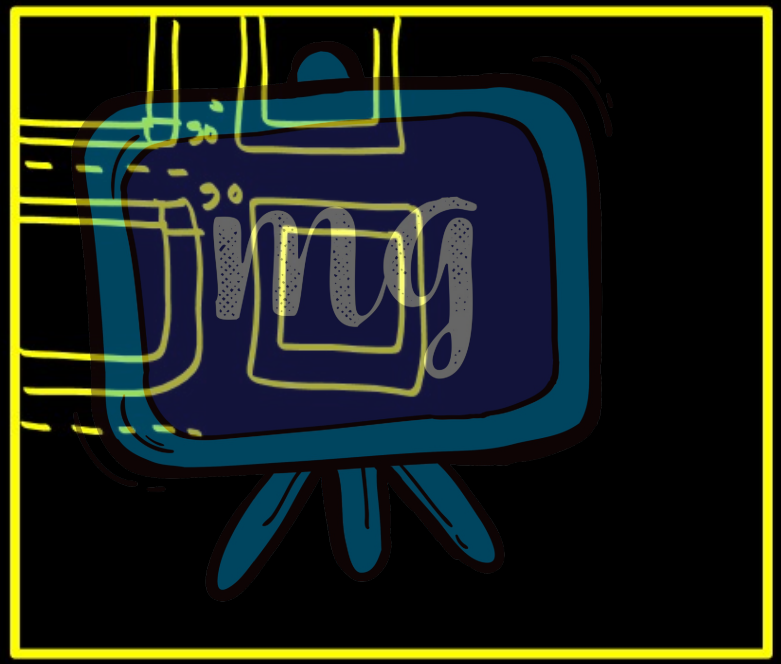

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

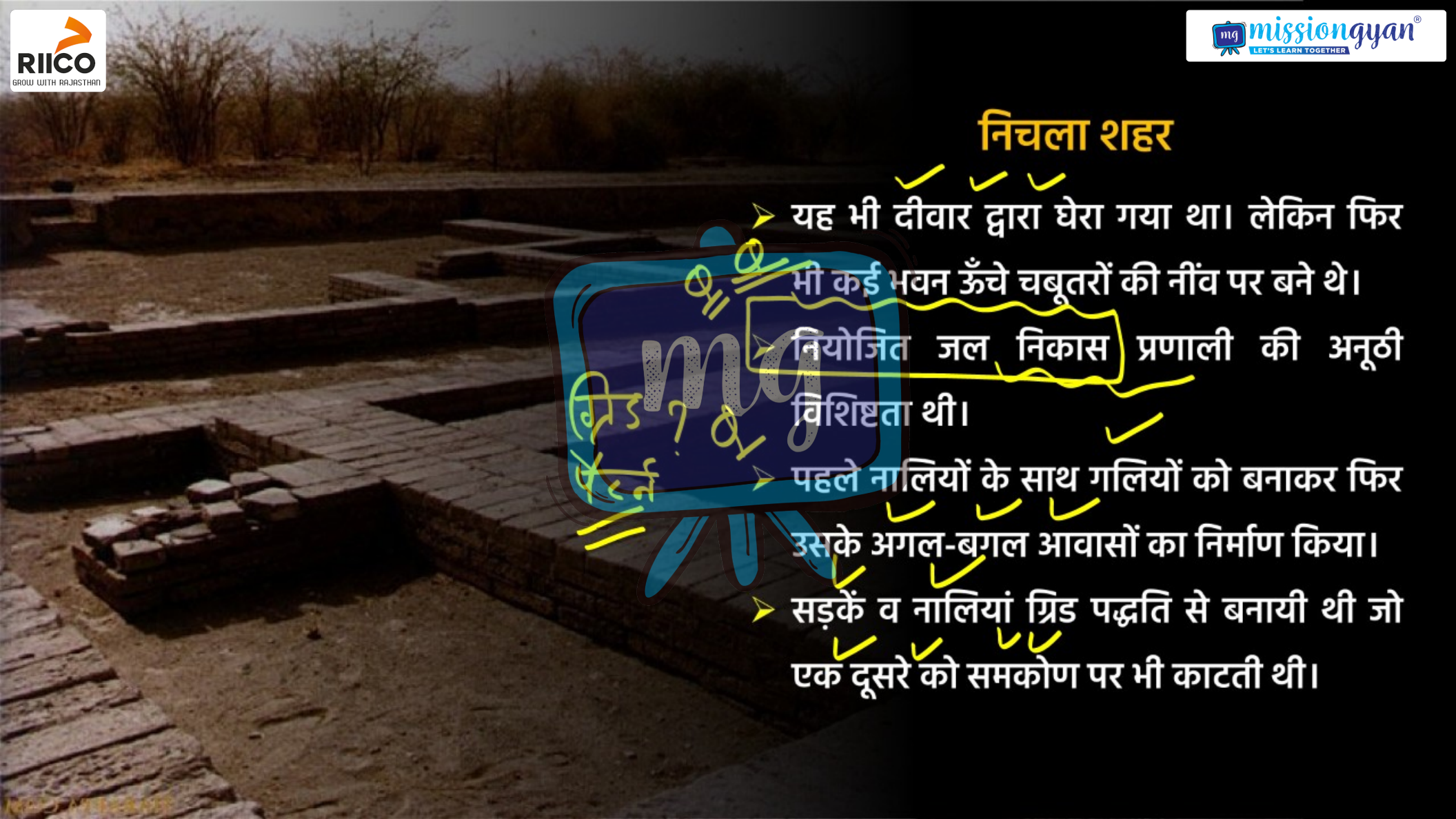

निचला शहर

- यह भी दीवार द्वारा घेरा गया था। लेकिन फिर भी कई भवन ऊँचे चबूतरों की नींव पर बने थे।
- नियोजित जल निकास प्रणाली की अनूठी विशिष्टता थी।
- पहले नालियों के साथ गलियों को बनाकर फिर उसके अगल-बगल आवासों का निर्माण किया।
- सड़कें व नालियां ग्रिड पद्धति से बनायी थी जो एक दूसरे को समकोण पर भी काटती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

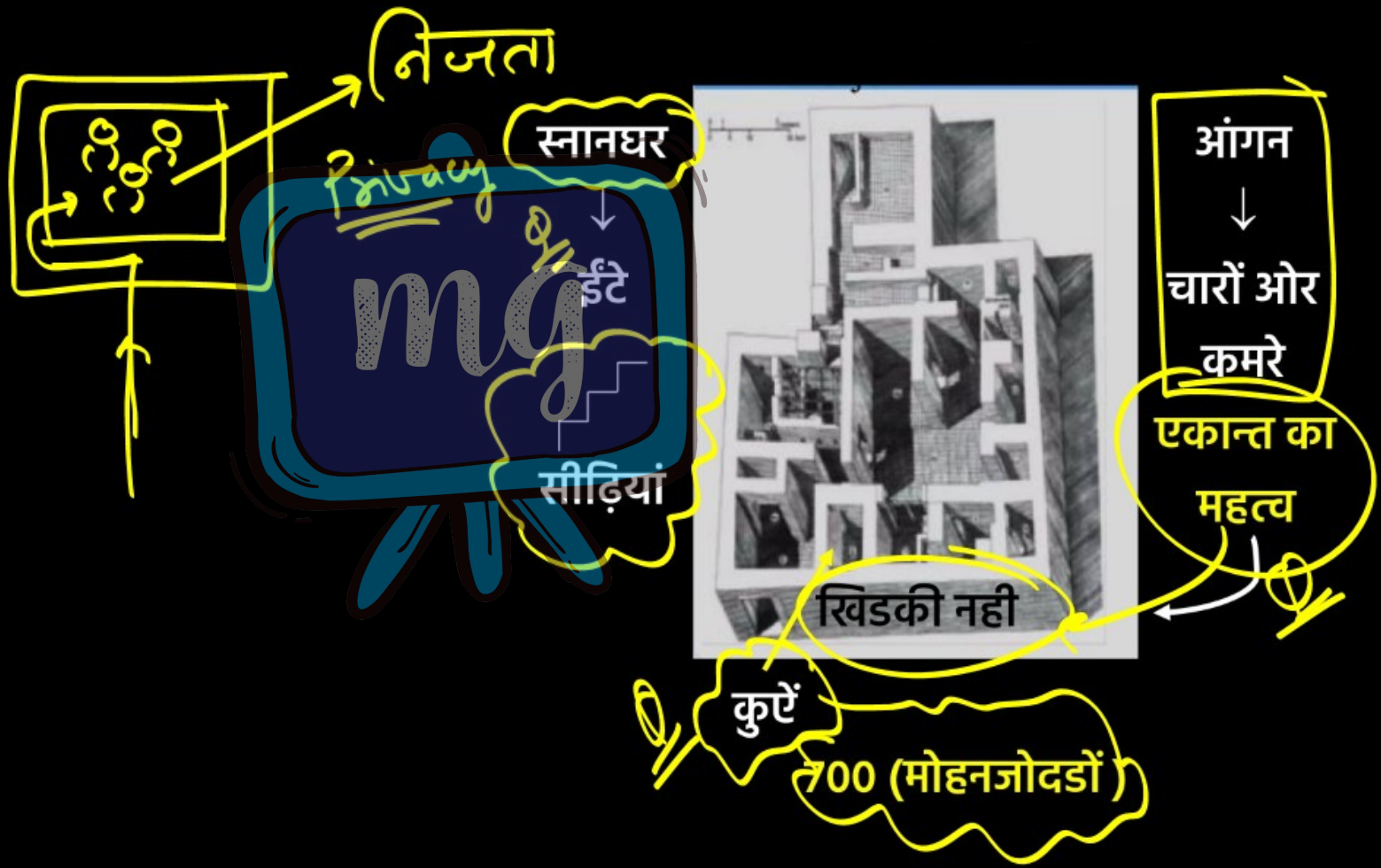

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

दुर्ग



दुर्ग : विशिष्ट सार्वजनिक प्रयोजनों की संरचनाएँ मिली हैं।

(i) मालगोदाम :-

ईंटों से बने इनके निचले हिस्से ही शेष हैं। ऊपरी हिस्से संभवतः लकड़ी के बने होने के कारण नष्ट हो गये।


विशाल

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दुर्ग

(ii) विशाल स्नानागार :-

- चारों ओर से गलियारों से घिरा।
- तल तक जाने के उत्तरी व दक्षिणी भाग में सीढियाँ
- जलाशय के किनारों पर ईंटों को जमाकर तथा जिप्सम के गारे का प्रयोग कर इसे जलबद्ध किया गया।

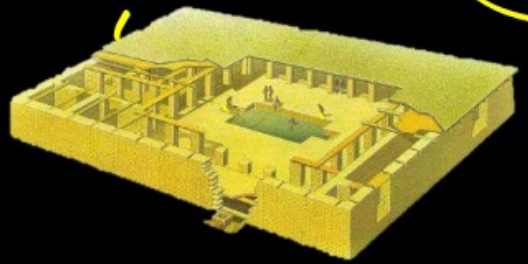

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इसके तीनों ओर कक्ष बने हैं, जिसमें 1 में 1 बड़ा कुआँ हैं।
- जलाशय का पानी एक बड़े नाले में जाता है।
- दूसरी ओर 8 स्नानघर हैं।

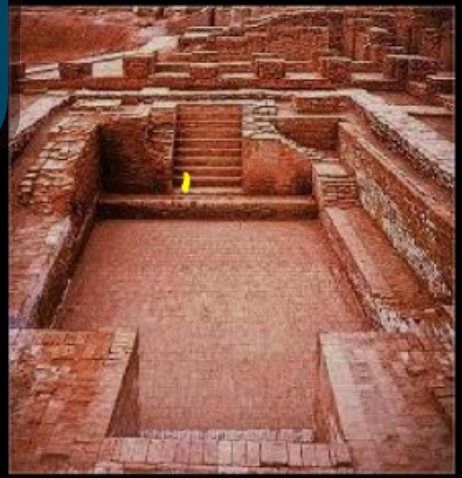

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- ये स्नानघर एक गली के दोनों ओर 4–4 हैं।
- प्रत्येक स्नानघर की नालियां गली के नाले से मिलती है।
- इसकी विशालता एवं अनोखापन यह दर्शाता है कि इसका प्रयोग किसी विशेष आनुष्ठानिक स्नान के लिए होगा।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. हम कैसे कह सकते हैं की मोहनजोदड़ो हड़प्पा सभ्यता का प्रमुख शहर था?



mg

या

मोहनजोदड़ो शहर पर एक लेख लिखे?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. मोहनजोदड़ो एक नियोजित शहर था? टिप्पणी करें

Q. ग्रिड पैटर्न से आपका क्या आशय है?

Q. मोहनजोदड़ो की जल निकास प्रणाली समझाइये?

Q. मोहनजोदड़ो की गृह स्थापत्य कला पर चर्चा करें

Q. मोहनजोदड़ो शहर के कितने भाग थे? वहां लगभग कितने कुएं थे?



Q. मो० शहर के दुर्ग क्षेत्र पर चर्चा करें?

Q. विशाल स्नानागार की भव्यता पर एक लेख लिखे?

Q. मालगोदाम / विशाल अन्नागार अधूरा प्रतीत होता है? कारण सहित उत्तर दिजिए?

सामाजिक भिन्नताओं का अवलोकन

A. शवाधानों का अध्ययन

(1) शवाधान : शवों का गर्तों में दफनाया जाता था।

- गर्तों की बनावट एक दूसरे से भिन्न होती थी। क्योंकि कुछ गर्तों की सतहों पर ईंटों की चिनाई की जाती थी जो कि सामाजिक भिन्नता का संकेत देती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ कब्रों में मृदभाण्ड तथा आभूषण मिले हैं जो संकेत देते हैं कि उनकी मान्यता रही हो कि ये मृत्योपरांत प्रयोग किये जा सकते हैं।
- कुछ शवाधानों में पुरुषों एवं महिलाओं दोनों में आभूषण मिले हैं।
- मृतकों के तांबे के दर्पणों के साथ भी दफनाया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- 1980 के दशक में हड़प्पा के कब्रिस्तान में उत्खन्न में एक पुरूष की खोपड़ी के समीप शंख के उछल्ले, जैस्पर (एक उपरत्न), मनके, सूक्ष्य मनकों से बना एक आभूषण मिला है।
- मिश्र में भी विशाल पिरामिडों में जो कि हड़प्पा सभ्यता के समकालीन थे राजकीय शवाधान बड़ी मात्रा में मिले हैं। जिनमें धन-सम्पत्ति भी दफनाई जाती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

B. उपयोगी तथा विलास की वस्तुओं में वर्गीकरण

(a) उपयोगी वस्तुएं :– ये रोजमर्रा के उपयोग की वस्तुएं हैं जो पत्थर या मिट्टी से बनायी जाती है।
जैसे- चक्कियां, मृदभाण्ड, सुइयां आदि। ये वस्तुएं सभी बस्तियों में सर्वत्र पायी गयी हैं।

(b) विलास की वस्तुएं :– ये दुर्लभ या महंगी होती हैं। ये स्थानीय स्तर पर अनुपलब्ध पदार्थ से अथवा जटिल तकनीक से बनती हैं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

शिल्प कार्य

- मनके बनाना
- शंख की कटाई
- धातुकर्म
- बांट बनाना







RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



1. **मनकें बनाना :** मनकों का निर्माण विविध पदार्थों से होता था।
   - कार्निलियन (सुंदर लाल रंग का)
   - जेस्पर
   - स्फटिक
   - शैलखड़ी जैसे पत्थरों से तथा
   - तांबा
   - कांसा
   - सोना जैसे धातुओं से

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- शंख
- फयान्स
- पकी मिट्टी से भी मनके बनते थे।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

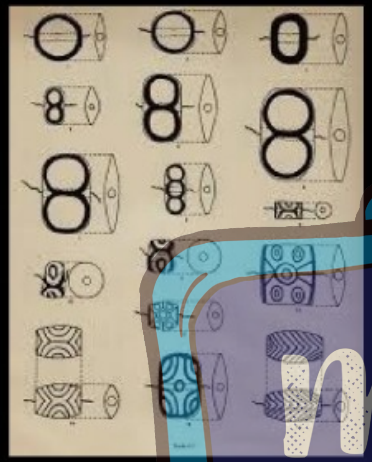

मनके कई आकार के होते थे

1. चक्राकार
2. बेलनाकार
3. गोलाकार
4. ढोलाकार
5. खण्डित

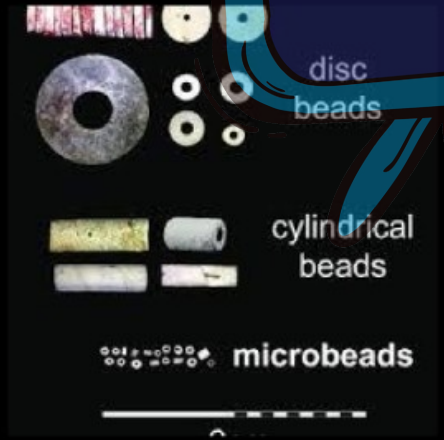





RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- मनकों को उत्कीर्णन या चित्रकारी से सजाया गया।
- सेलखड़ी चूर्ण के लेप को सांचे में ढालकर मनके बनाए जाते थे।
- कार्निलियन का लाल रंग पीले कच्चे माल को पकाकर प्राप्त होता था।
- पत्थर के पिंड पहले तोड़े जाते, फिर बारीकी से शल्क निकालकर अंतिम रुप दिया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER





- इसके बाद घिसाई, पॉलिश और छेद करने की प्रक्रिया होती थी।
- चन्हूदड़ो शिल्प कार्य में लगभग पूरी तरह संलग्न था।
- चन्हूदड़ो, लोथल और धौलावीरा में छेद करने के विशेष उपकरण मिले हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. **शंख से बनी वस्तुएँ :** शंख से चूड़ियां, करछियां और पच्चीकारी की वस्तुएं बनती थीं।

- नागेश्वर और बालाकोट, समुद्र तट के पास होने के कारण, शंख निर्माण के प्रमुख केंद्र थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



मानचित्र 1
कुछ महत्वपूर्ण
विकसित हड़प्पा पुरास्थल
रेखाचित्र

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्पादन केन्द्रों की पहचान

शिल्प उत्पादन के केन्द्रों की पहचान पुरातत्वविद् कुछ चीजों को ढूंढकर करते हैं। जैसे-

(i) जहां पर प्रस्तर पिंड, पूरे शंख, तांबा अयस्क जैसा कच्चा माल मिला हो।

(ii) औजार मिले हों।

(iii) अपूर्ण वस्तुऐं हों।

(iv) त्याग दिया गया माल और कूड़ा करकट मिला हो।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

माल प्राप्त करने संबंधी नीतियाँ (तरीके)

- शिल्प उत्पादन के लिए स्थानीय मिट्टी के अलावा पत्थर, लकड़ी और धातु बाहर से मंगाए जाते थे।

(i) बैलगाड़ियों के मिट्टी के प्रतिरूप मिले हैं, जो स्थल मार्ग के लिए बैलगाड़ी को परिवहन का महत्वपूर्ण साधन दर्शाते हैं।

(ii) सिंधु तथा इसकी उपनदियों के किनारे पर रहने वाले लोग नदी मार्गों का प्रयोग करते होंगे।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उपमहाद्वीप तथा उसके आगे से आने वाला माल

- शिल्प उत्पादन हेतु माल प्राप्त करने के लिए हड़प्पावासी कई तरीके अपनाते थे।

1. नागेश्वर एवं बालाकोट जहां शंख उपलब्ध थे, बस्तियां स्थापित कर लीं।
2. शोर्तुघई (अफगानिस्तान) कीमती नीले रंग के लाजमर्द मणि के स्त्रोत के निकट था।
3. लोथल

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(a) कार्निलियन के स्त्रोत (गुजरात में भरुच)

(b) सेलखड़ी के स्त्रोत (दक्षिणी राजस्थान तथा उत्तरी गुजरात)

(c) धातु स्त्रोत (राजस्थान) के निकट था।

4. कच्चा माल प्राप्त करने के लिए राजस्थान में खेतड़ी से (ताँबा) तथा दक्षिण भारत (सोने के लिए) अभियान भेजकर संपर्क स्थापित करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- खेतड़ी क्षेत्र के साक्ष्यों को पुरातत्वविदों ने गणेश्वर जोधपुरा संस्कृति नाम दिया।
- यहां के मृदभांड हड़प्पा से भिन्न थे और तांबे की वस्तुओं के असाधारण भंडार के केंद्र थे।

सुदूर क्षेत्रों से संपर्क

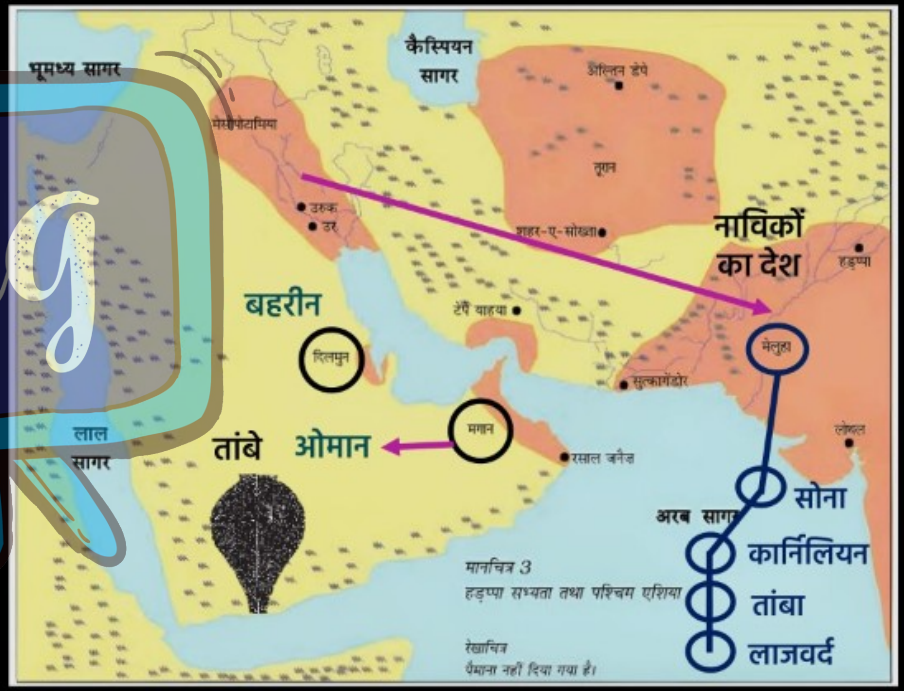

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- तांबा संभवतः ओमान, अरब प्रायद्वीप के दक्षिण-पूर्वी छोर से लाया जाता था।
- ओमानी तांबे और हड़प्पाई पुरावस्तुओं में निकल के अंश मिले हैं।
- मेसोपोटामिया के लेखों में मगान (ओमान) से तांबे के आगमन का उल्लेख मिलता है, जो लंबी दूरी के संपर्कों को दर्शाता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- मेसोपोटामिया के लेखों से दिलमुन (बहरीन द्वीप), मगान (ओमान), मेलुहा (हड़प्पाई क्षेत्र) से संपर्कों की जानकारी मिली है तथा इन लेखों में मेलुहा से कार्निलियन, लाजवर्द मणि, ताँबा, सोना तथा विशिष्ट प्रकार की लकड़ी प्राप्त करने के भी उल्लेख हैं।

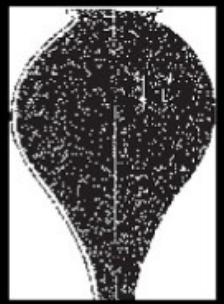

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- एक विशिष्ट हड़प्पाई मर्तबान, जिसके ऊपर काली मिट्टी की परत चढ़ाई जाती थी, ओमानी स्थलों से मिला है।
- काली मिट्टी तरल पदार्थ के रिसाव को रोकती थी।
- संभवतः हड़प्पाई लोग इसमें रखे सामान के बदले ओमानी तांबा लेते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- मेसोपोटामिया से मेलुहा लोगों का संपर्क सामुद्रिक मार्ग से था, इसलिए वो मेलुहा को नाविकों का देश कहते थे। मोहर पर नाव का चिह्न यही दर्शाता है।

